महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

१४/०९/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा गुरुजी को नमस्ते। परमात्मा गुरुजी को यह सेवा समर्पण है ।

सभी आत्माएँ अपने मूलस्वरुप में स्थित हो जाएँ... ब्रेन के अंदर हाइपोथैलेमस और पिट्यूटरी ग्लैंड के बीच में मुझ आत्मा का सिंहासन है... उस सिंहासन पर मैं आत्मा स्थित हूँ... अपने मूलस्वरुप को देखें... अपने मूलस्वरुप के वाइब्रेशन को अनुभव करें... मैं आत्मा चमकता सितारा... यह मैं हूँ... यह मेरा मूलस्वरुप है... अनुभव करते जाना... देखना अपना मूलस्वरुप कैसे चमक रहा है... उससे एक लाइट निकल रही है... अनुभव करें... यह जो मेरा मूलस्वरुप है... उसके वाइब्रेशन ब्रेन में फैल रहे है... कुछ सेकंड इन वाइब्रेशन को फील करो... देखिए.. अपना मूलस्वरुप... इस मूलस्वरुप के वाइब्रेशन पूरे शरीर में फैल रहे हैं... अनुभव करें... यही मेरा सत्य स्वरुप है... यह मैं हूँ... यह मैं.. मेरे सभी सूक्ष्म और स्थूल कर्मेंद्रियों को चलाती हूँ... देखें अपना मूलस्वरुप... जितना-जितना हर कोई अपना मूलस्वरुप देखेगा उतना-उतना उसका मूलस्वरुप जागृत होगा...

सभी आत्माएँ अपने सत्य स्वरुप को मूलस्वरुप को जागृत करें। आप जो जिस शरीर में बैठे हो वह एक इंस्ट्रूमेंट है। क्या आपको यह फील होता है कि शरीर आपका सिर्फ एक साधन है। क्या कभी अनुभव किया है कि सच में यह शरीर मेरा साधन कैसा है? आत्मा जिस भी शरीर में उपस्थित है, वह शरीर आत्मा के पिछले जन्म के कर्म के हिसाब से उसे इस जन्म में वह शरीर मिला है। फिर आत्मा के पास जैसा भी शरीर हो फिर वह स्वस्थ हो या उस शरीर के अंदर कोई बीमारियाँ हों। उसका सिर्फ और सिर्फ एक ही कारण है, उसके कर्म। आत्मा को अपने कर्मों को संभालना होगा। पर सबसे पहले कौनसा कर्म संभालना होगा। आत्मा अपने मूलस्वरुप में रहने का प्रमुख कर्म जब संभालेगी तब उसके बाहरी सभी कर्म अपने आप संभल जाएँगे। मूलस्वरुप एक ऐसी

स्थिति है जिसमें आत्मा को सब पता चलता है क्या करना चाहिए? क्या नहीं करना चाहिए? इसलिए अगर किसी को परिवर्तन होना ही है, तो उसे अपने मूलस्वरुप के कर्म का ध्यान रखना होगा। परिवर्तन किसे होना है? आप जिस तन में हो उस तन के संस्कारों का, या आप आत्मा जब से पार्ट बजाते आए हो उस पार्ट से लेकर आप आत्मा ने जो संस्कार बनाए हैं उनका।

दो प्रकार के संस्कार हैं, एक संस्कार है जो आत्मा अपने पिछले जन्मों से लेकर आई है और एक संस्कार है जो आत्मा इस जन्म में जिस तन में, जिस परिवार में, जहाँ पर उसने वह तन धारण किया है वहाँ के वह संस्कार। आत्मा को बहुत कुछ परिवर्तन करना है। आत्मा को सिर्फ अभी के इस जन्म के संस्कारों का ही परिवर्तन नहीं करना है। बल्कि जन्मों-जन्म के जो संस्कार आत्मा के अंदर भरे, उन संस्कारों का भी परिवर्तन करना है। क्या हर कोई आत्मा को पता है, उसके पास क्या सच में पर्याप्त समय है इतनी सारे बातों का परिवर्तन करने का। आत्मा कहां खो गई है? आत्मा को बहुत काम है और समय कम है। इस संगम युग में आत्मा को अपने पुराने संस्कारों का परिवर्तन करके देवताई संस्कारों को धारण करना है।

आत्मा के पास रोज का अपना एक टारगेट होना चाहिए कि आज मुझे कौन से संस्कार पर काम करना है। कितने समय में या कितने दिन में मेरा यह एक देवताई संस्कार बनेगा? कितने समय में या कितने दिन में मेरे अंदर जो विपरीत संस्कार हैं, उसका संपूर्ण रुप से त्याग होगा, उस संस्कार की विस्मृति होगी। फिर वह सूक्ष्म कर्मेंद्रियों से लेके स्थूल कर्मेंद्रियों तक उसके अंदर वह परिवर्तन होगा। हर आत्मा के पास अपना एक हिसाब किताब जरुर होना चाहिए, मुझे मेरे अंदर क्या क्या परिवर्तन करना है। और हर आत्मा अपना खुद का एक चार्ट बनाए। इतने समय में हम यह संस्कार धारण करेंगे। उसके बाद जब वह संस्कार पूर्ण रुप से धारण होगा, हम दूसरे संस्कार पर काम करेंगे। उसके बाद, तीसरे संस्कार पर काम करेंगे। ऐसे हर आत्मा के पास अपना चार्ट अवश्य होना चाहिए।

मेरे ऐसे कौन से संस्कार हैं, जिससे दूसरों को दुख मिलता है। हर आत्मा को अपनी चेकिंग करनी चाहिए। मेरा ऐसा कौन सा व्यवहार है, जिससे दूसरों को दुख मिलता है, दूसरे हम से अशान्त होते हैं। हर आत्मा को पता होना चाहिए। अगर हर आत्मा सच्चे दिल से अपनी चेकिंग करेगी, तो उसको उसके अंदर की सभी बातें समझ में आएँगी। पर आत्मा को सबसे पहले एक विपरीत गुण का त्याग करना होगा, वो है अहंकार, जो की आत्मा के अंदर है ही नहीं, वो मायावी अस्तित्व के अंदर है, क्योंकि आत्मा की रचना बहुत दिव्य है, पर अहंकार के परवश होकर, आत्मा होश में ना आने के कारण वह अपनी चेकिंग नहीं कर पाएगी। उस परवशता के कारण उसको यही लगेगा, मैं जो कर रही हूँ, वह सही कर रही हूँ और जब तक आत्मा को यह रियलाइज ही नहीं होता कि मैं गलत हूँ तब तक आत्मा के कोई भी विपरीत गुण, विपरीत संस्कार कभी नहीं निकल सकते हैं।

यह एक ही संगम युग है जिसमें आत्मा अपने विपरीत गुणों का, विपरीत संस्कारों का सम्पूर्ण रुप से त्याग कर सकती है। अपने अंदर दिव्य गुणों को भर सकती हैं। पर यह कब होगा? जब आत्मा अहंकार के परवश ना होकर, सच्चे दिल से अपनी चेकिंग कर पाएगी। तब ही यह पॉसिबल होगा क्योंकि अहंकार एक पर्दा है, जिसके कारण सत्य छिप जाता है। कितना भी दिखाने की कोशिश करें, पर सत्य दिख नहीं पाएगा। इसलिए अगर आत्मा को सबसे पहले अगर परिवर्तन होना है, तो इस विपरीत गुण का जो मायावी अस्तित्व का है, आत्मा का नहीं है, उसे त्यागना होगा। जो चीज आत्मा की है ही नहीं, उसे आत्मा अपना मान कर बैठी है। इसलिए सभी आत्माएं होश में आए। आप यहां इस धरा पर, इस तन में आपके कल्याण के लिए और परिवर्तन के लिए हो, इसे सदा स्मृति में रखे। मायावश होकर, परिस्थिति वश होकर, आत्मा कभी अपने स्वधर्म को, अपने दिव्य गुणों को छोड़ नहीं सकती, क्योंकि आत्मा इससे ही बनी है।

परिवर्तन की सबसे महत्वपूर्ण यह कड़ी है - आत्मा को मायावी, विपरीत अस्तित्व का, विपरीत गुणों का त्याग करना है, बाकी सभी गुण आत्मा के अंदर भरपूर है। जैसे अहंकार रुपी विपरीत मायावी अस्तित्व का नाश होता जाएगा, आत्मा अपने आपको संपूर्ण गुणस्वरुप अपने

आपको देख पाएगी। आत्मा को सदा ज्ञात हो - जो चीज़ मेरी नहीं है, यह विपरीत गुण, मायावी अस्तित्व मेरे नहीं है, मैं क्यों इन्हें मेरा समझकर बैठूँ? सभी आत्माएं होश में आना। सभी आत्माएं बेहद सुन्दर है, बेहद दिव्य है। सभी आत्माएं जितना-जितना अपने मूल स्वरूप के अभ्यास को करती जाएंगी, उतना-उतना सभी आत्माओं को अपना दिव्य स्वरूप समझता जाएगा। आत्मा को समय निकालना होगा अपने उस मूल अस्तित्व में, मूलस्वरूप की अवस्था में पहुँचने के लिए। यह संगम युग बहुत बहुत बहुत अनमोल है। यहां का एक-एक सेकंड बहुत महत्वपूर्ण है। यह बात हर किसी को अंत में ज़रूर पता चलेगी और हर किसी के पास अपना पोतामेल आएगा कि इस संगम युग में, हर किसी ने कितना समय अपने परिवर्तन को लेकर सफल किया या कितना समय मायावी बातों में गवाया।

इसलिए सभी आत्माएं जागृत हो जाएँ। आज का सभी आत्माओं के लिए यह होमवर्क है - हर कोई अपने संस्कारों का परिवर्तन का चार्ट बनाएं। कौनसे संस्कार परिवर्तन करने हैं और कब तक करने हैं। और सभी अवश्य ध्यान में रखें, सभी के पास समय लिमिटेड है। इसलिए जल्द से जल्द अपने परिवर्तन की यात्रा शुरु करो। जो सच्ची दिल से अपना यह चार्ट रखेंगे, उस पर काम करेंगे, उनके पास परमात्मा की शक्ति अवश्य पहुँच जाएगी।

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः